इकाई 5 नगरीय भारत

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 नगरीकरण और इसका विस्तार

   5.2.1 नगरीकरण की सामाजिक प्रक्रिया

   5.2.2 नगरवाद जीवन की एक शैली के रूप में

5.3 स्वतंत्रतापूर्व के भारत में नगरीकरण

   5.3.1 पारम्परिक शहर का वर्गीकरण

   5.3.2 प्राचीन और मध्यकालीन भारत में नगरीकरण

   5.3.3 उपनिवेशवाद के अधीन नगरीकरण

5.4 स्वतंत्र भारत में नगरीकरण

5.5 ग्रामीण-नगरीय सातत्य

5.6 भारत में नगरीकरण के मुद्दे

5.7 सारांश

5.8 संदर्भ

5.9 बोध प्रश्नो के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस ईकाई को पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- नगरीय भारत की विभिन्न पहलुओं का वर्णन करने में;
- भारत में नगरीकरण के इतिहास को बयान करने में;
- स्वतंत्र भारत में नगरीकरण के अनेक पहलूओं का परीक्षण करने में;
- ग्रामीण और नगरीय भारत के बीच जटिल आपसी-संबधो का वर्णन करने में, और
- भारत में नगरीय समस्याओं का वर्णन करने में।

5.1 प्रस्तावना

हम लोगों ने अब तक भारतीय समाज के अलग-अलग पहलू पर बात की है। इसके पहले की ईकाई में, हम ने भारतीय गाँवों को देखा और अब हम लोग नगरीय भारत पर बात करने जा रहे हैं। जैसा कि हम इससे पहले की इकाई में अध्ययन से जानते है, उपनिवेशवाद के साथ कृषि से उद्योग की तरफ बदलाव में वृद्धि हुई और वृहत पैमाना पर राजनितिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी बदलाव आया और आधुनिक, खासकर आर्थिक शहर जैसे कलकत्ता और मुम्बई का भारत में उदय हुआ। भारत में नगरीकरण की गलत धारणाओं में से एक है इसकी औद्योगीकरण और उपनिवेशवाद से संलग्नता, जबकि उपनिवेशवाद ने नगरीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, पर भारत के नगरीकरण का

*यह इकाई कनिका कक्कर द्वारा लिखित है।

लम्बा इतिहास रहा था। इसलिए इस इकाई के एक खंड एक मे स्वतंत्रता पूर्व के भारत में नगरीकरण का उल्लेख है। इस खंड के बाद में हम स्वतंत्रता के बाद भारत में शहरीकरण का अनेक पहलुओं का परीक्षण करेगें। भारत में नगर की अनेक संकल्पनाएँ प्रशासनिक और योजना के दृष्टिकोण से हैं जो नगरीय क्षेत्र के स्थानिक और जनसांख्यिकी पहलू पर केन्द्रित हैं। नगरीय केंद्र और नगरीकरण भी अक्सर ग्रामीण सभ्यता और बसावटों से संबंधित वर्णन हैं, इस से यह दृष्टिकोण उजागर हुआ कि नगर और ग्रामीण क्षेत्र एक-दूसरे के विरोधी और परस्पर अलग वर्ग हैं। दूसरे तरफ अनेक समाजशास्त्री नगर को वर्गीकृत करने के गति विज्ञान से पूर्ण रूप से सचेत हैं। भारतीय समाज ग्रामीण और नगरीय परिदृश्य का जटिल तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। नगरीय-ग्रामीण सातत्य के खंड में, हम लोग इस जटिलता की प्रवृति का परीक्षण करेगें और परीक्षण करेगें कि कैसे वास्तव में ग्रामीण और नगर परस्पर एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। हम लोग नगरीकरण के समस्या की संक्षिप्त विवरण के साथ इस खंड का अंत करेगें।

5.2 नगरीकरण का विस्तार

बहुत साधारण ढंग से कह सकते है कि नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें लोग गाँव से शहर की तरफ जाते है जहाँ पर आर्थिक क्रियाएँ गैर कृषि व्यवसायों जैसे व्यापार, निर्माण कारखाना, प्रशासन और अन्य क्रियाकलापो पर केन्द्रित है। लोगों की यह गतिशीलता मात्र जनसांख्यिकीय, स्थानिक, व्यवसायिक अर्थ में ही परिवर्तित नहीं करती बल्कि जीवन की सामाजिक स्थिति पर भी प्रभाव डालती है। लुई वर्थ का विश्वास है कि नगरीकरण एक जीवन पद्धति हैं और यह सामाजिक संबंधों और व्यक्तित्वो को प्रभावित करती हैं। चलिए, नगरीकरण के इन दो पहलुओं पर प्रकाश डाले।

5.2.1 नगरीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया

नगरीकरण ग्रामीण कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को नगरीय व्यापार और सेवा आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की एक प्रक्रिया है। कोई भी नगरीय केंद्र अंतर्क्शेत्र, जो नगरीय अनुत्पादक को खाद्यान्न पहुँचाता है, के बिना कार्यान्वित नहीं हो सकता हैं। इस तरह, एक प्रमुख मुख्य कारक जो नगरीय क्षेत्र की उत्पन्नता को समर्थ करता है वह है अतिरिक्त खाद्यान्न उत्पादन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का निर्वाह योग्य पैदावार से अतिरिक्त पैदावार में परिवर्तित होना। इस तरह किसी भी नगरीय केंद्र की संभावना से पहले एक खास स्तर पर तकनीकी में बदलाव आवश्यक हैं।

ग्रामीण बसावट की तुलना में नगरीय क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या, अधिक जनसंख्या घनत्व और अधिक सामाजिक विभिन्नता है। नगरीय केंद्रो में रहने वाले अधिकतर लोग उन क्रियाकलापों में व्यस्त होते है जो सीधा खाद्यान्न उत्पादन से संबंधित नहीं है। इन क्रियाकलापो में सामाजिक, सांस्कृतिक, औधोगिक, व्यवसायिक, धार्मिक, कलात्मक, शैक्षिक, सैन्य, राजनीतिक या प्रशासनिक प्रकार्य होते हैं। ऐसे विभिन्न क्रियाकलापो के लिए अनेक तरह की क्षमता वाले लोगों की जरूरत होती हैं। यह बहुलता या विभिन्नता प्रदर्शित करती है कि यहाँ शहर में ज्यादा सामाजिक विभिन्नता होती हैः "नगरीय केंद्र धनी और गरीब, शासक और शासित, बेचने वाला और खरीदार, कारीगर और व्यापारियों का घर होता हैं" (वर्थ, 1938ः 360-366)।

नगरीय क्षेत्र केंद्रीकृत राजनीतिक प्राधिकारियों से भी संलग्न होता है और राज्य जो नगरीय क्षेत्रों में प्रशासनिक उद्धेश्य के लिए आवश्यक लोगों की संख्या की गणना करता हैं। नगरीकरण इस तरह से नौकरशाही और लोगों के एक वर्ग को जन्म देता है जो पूर्णकालिक

आधार पर प्रशासक होते है। सबसे पहले का प्रशासक वर्ग जिसे हम जानते है वह चीन के मैन्डारिन है।

नगरीकरण के विचार को और अधिक विस्तारित और अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है जब इसके प्रसार और संस्कृति-संक्रमण के विचार का सैद्धान्तिक रुप में वर्णन किया जाय। नगरीकरण को या तो अंतः-समाज या अंतरा-समाज प्रसार के रुप में समझा जा सकता हैं, अर्थात, नगरीय संस्कृति एक ही समाज के विभिन्न भागो में फैल सकती है या यह सास्कृतिक या राष्ट्रीय सीमा को पार कर सकती हैं और दूसरे समाजों में फैल सकता हैं। यह लेना और देना दोनों में संलग्न होता हैं। एक प्रक्रिया जो प्रसारित सांस्कृतिक-संक्रमण की सहायक होती है, वह प्रक्रिया है जिसके तहत, व्यक्ति भौतिक पदार्थ का, व्यवहारिक पैटर्न्स, सामाजिक संगठन, ज्ञान का अंग और उन समूह को अर्थ सीधे संपर्क द्वारा ग्रहण करता है जिनकी संस्कृति उनकी अपनों से कुछ अलग और कभी-कभार राजनीतिक अधीनता भी होती हैं। इस तरह नगरीकरण तब हो सकता हैं जब दो संस्कृतियां एक दूसरे के संपर्के में आये और तब भी जब सर्वोच्च स्थिति वाला व्यक्ति जबरदस्ती या सौम्यता से अपनी संस्कृति और जीवन के तरीके को दूसरो पर थोपे। यह एक तरीका हैं जो पश्चिमी उपनिवेशको ने अपने शासित देशो में चलाया और नगरीकरण को पश्चिमिकरण के समानार्थी आर्थिक और सांस्कृतिक रुप में दर्शाया। जबकि, नगरीय केंद्र अनेक प्राचीन सभ्यताओं में है ये जिनका विकास धार्मिक, व्यापारिक और राजनीतिक बसावट पर आधारित था। भारत में, बनारस को देखा जा सकता है एक उदाहरण के रुप में जिसको एक पवित्र मिश्रण कहा जा सकता हैं, जबकि गुजरात में सूरत एक व्यवसायिक शहर है और दिल्ली हमेशा से एक राजनीतिक रणनीतिक केंद्र रहा हैं। जैसा कि हम देख सकते है नगरीकरण अनेक पहलूओं को संलग्न करने वाली एक जटिल प्रक्रिया है।

5.2.2 नगरवाद एक जीवन की एक शैली के रूप में

लुई वर्थ अपने किताब 'नगरवाद एक जीवन की पद्धति के रूप में (1938) लिखते है कि शहर में रहना प्रभावित करता है कि हम एक-दूसरे से कैसे बात करते है और यह हमारे व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। वे शहर का अपेक्षाकृत बड़ा, घना और सामाजिक रुप से भिन्न व्यक्तियों को स्थाई बसावट के रुप में चित्रण करता है और नगरीय लोगों में अनेक तरह के सामाजिक संबंधो और व्यवहार के पैटर्नों को जन्म देता है । और, लुइस वर्थ तर्क देते है कि शहरों का प्रभाव शहर से ज्यादा होता हैं। इस तरह, शहर करीब के गाँवो के साथ-साथ दूर तक के समुदायों को भी अपने कक्ष में ले लेता हैं। दूसरे शब्दो में, नगरीकरण एक जीवन के रुप में मात्र शहरी लोगों के लिए ही खास नहीं है क्योंकि शहर का प्रभाव इसके प्रशासनिक सीमा से दूर तक फैलता हैं। संक्षिप्त में, नगरीकरण इसके जनसांख्यिकी के अर्थ में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि के प्रारुप को दर्शाता हैं।

सामाजिक और सामाजशास्त्रीय प्रसंग में, नगरीकरण एक अलग तरह के जीवन को दर्शाता हैं खास कर शहर में रहने के अर्थ में और ग्रामीण जीवन को शहरी जीवन में परिवर्तन के रुप में। (देखेः https%//study-com/academy/lesson/louis&wirths &urbanism& as&a& way&of&life-html)

नगरीकरण सांस्कृतिक और सामाजिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को लागू करता है जहाँ पर लोग भौतिक और अभौतिक संस्कृति, व्यवहारिक पैटर्नस, संगठन के प्रारुप और विचार जो बनता है, या जो शहर से अलग होता है, को ग्रहण करते है यद्यपि संस्कृति के बहाव का प्रभाव दोनों तरफ होता है-दोनों ओर शहर की तरफ और शहर से बाहर-यहाँ पर ठोस सहमति होती है कि शहरी सांस्कृतिक प्रभाव बाहरी लोगों पर अधिक होता है इसकी तुलना

में जो बाहरी संस्कृति का शहरी लोगों पर होता है। नगरीकरण को इस प्रकाश में देखने का यह परिणाम होता है जिसे टॉयनबी ने विश्व का "पश्चिमीकरण," कहा है, जब से औद्योगिक अर्थव्यवस्था पश्चिम उपनिवेशवाद के माध्यम से फैली है और विश्व में पूँजीवाद की पहुँच बढ़ी है।

सोचें और करें 1.

क्या आप को एक बड़े शहर और एक गाँव में रहने का मौका मिला है? आपका अपरिचित लोगों से शहर और गाँवों में क्या व्यवहार रहा? एक छोटी टिप्पणी लिखे और अपने सहपाठियों के अध्ययन से अपने केंद्र पर तुलना करे।

5.3 स्वतंत्रता पूर्व के भारत में नगरीकरण

भारतीय संदर्भ में नगरीकरण अक्सर औद्योगीकरण और अंग्रेजो के आने के साथ जोड़ा जाता हैं, इसमें कोई शक नहीं है कि औपनिवेशिक वाणिज्यिक और व्यापार के क्रियाकलापो ने औद्योगीकरण और व्यवसायीकरण को जन्म दिया है जिसने सम्पूर्ण नगरीय केंद्रो को जन्म दिया है; लेकिन भारत में नगरीकरण नई घटना नहीं है। भारतीय इतिहास में नगरीय केंद्रो का जिक्र है। वास्तव में, सबसे पहला शहर उप-महाद्वीप में सिन्धु घाटी सभ्यता (2500 बी. सी) में देखा जा सकता है।

यहाँ बहुत सारे पहलू है जिन्होंने भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया में सहयोग किया है। कृषि का अतिरिक्त उत्पादन, जो एक तकनीकी हस्तक्षेप का परिणाम है, यह उन पहलूओं में से एक है जिन्होनें व्यवसायों का विभेदीकरण और केंद्रीकृत राजनीतिक संरचना परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है और नगरीय केंद्रो की परिमाणित वृद्धि की है। कृषि पदार्थ से सहयोग के स्रोत के लिए शहर आंतरिक गाँवो पर निर्भर था । इतिहासकार, फर्नार्ड ब्राउडेल ने फ्रांस के मध्यकालीन शहरों पर लिखते हए अवधारणा दी है कि शहर गाँवों से जुड़ा हुआ हैं, जहॉ पर एक तरीके से कृषि पदार्थों के अतिरिक्त उत्पादन को लिया जाता हैं (ब्राउडेल, 1989:182-185)। भारतीय संदर्भ में भी, ''नगरीय केंद्रो के लिए ग्राम अतिरिक्त उत्पादन एक स्रोत और जीविका बन गया है। इतिहासकार पी. के बसन्त लिखते हैं, ''नगरीय केंद्र गाँवो से बचा हुआ अनाज लेने के लिए अनेक तरह के संस्थागत तंत्र तकनीक विकसित करते हैं। यह अतिरिक्त उत्पादन शहरी देवताओं के लिए एक सम्मान के रुप ले लेता है जो जमीन के स्वामी और सभी पैदावारो के स्रोत है ऐसा विश्वास किया जाता है। यह राजा द्वारा लिया जाने वाले कर का रुप ले लेता है या यह शहरी दस्तकारों और व्यपारियों द्वारा दिये गये सामान के बदले में देने वाली सामग्री होता हैं। इस तरह से, कानून, परम्परा और विश्वास की पद्धति जो सेना की शक्ति से समर्थित है का उपयोग कृषि पैदावार के हस्तातरण में किया जाता हैं,'' (बसन्त, 2017:11)। जबकि कृषि का अतिरिक्त उत्पादन शहरों के विकास के लिए आवश्यक है, व्यापारी क्रियाकलापों का शहरी केंद्रो के विकास पर असर पड़ता हैं, खासकर व्यापारी मार्ग और बन्दरगाहो पर। उतना ही महत्व अनेक राज्यों, साम्राज्यों, रियासतो में है जिनके उठने से शहर बढ़ा है और गिरने से शहर का ह्रास हुआ है। इसके बाद जो उप-खण्ड हैं उसमें हम प्राचीन, मध्यकालीन और औपनिवेशिक भारत में नगरीकरण के विभिन्न पहलूओं पर ध्यान देगें, लेकिन पहले हम लोग इतिहास में शहरों के कुछ वर्गो को देखेंगे।

5.3.1 पारम्परिक शहरों का वर्गीकरण

प्राचीन भारत में अनेक प्रकार के शहर थे। वास्तुशास्त्र (उत्कृष्ट भारतीय वास्तुकला पर निबंध) ने अनेक तरह के शहरों में उनके कार्यकलापों की विशेषताओं के अनुसार भिन्नता

दिखायी हैं जैसे व्यापार, व्यवसाय, निर्माण, प्रशासन और सेना का चलन। जबकि, पारम्परिक शहरों को उनके कार्यकलापो की विशेषता के आधार पर वृहत रुप में वर्गीकृत किया जा सकता हैं।

1) **व्यापार और निर्माणकर्ता शहरः** नगर जैसे पट्टन, द्रोणमुख, खेत, निगम इत्यादि जगह इन वर्ग में है। नगर एक सामान्य सुरक्षित शहर था जिसकी मुख्य गतिविधि आंतरिक व्यापार थीं। पटटन एक बडा व्यावसायिक बन्दरगाह थां जो नदी या समुद्र के किनारे पर अवस्थित था। पटटन की प्रमुख विशेषता यह थी कि यह व्यवसायी जाति (वैश्य) का शहर था और उन लोगों के पास पूरा गहना, धन, रेशम, सुगंधित वस्तु और अन्य सामान हैं। द्रोणमुख, खेत इत्यादि भी छोटे आकार के व्यापारी केंद्र थे। निगम एक बाजार शहर था जिसमें कारीगरों का निवास था और व्यापारियों और काफिलों की आराम करने की जगह थी।

   i) **राजनीतिक और सैन्य शहर** : राजधानी एक विशिष्ट नियोजित राजनीतिक शहर होती थी। यह राजाओं की राजधानी थी। दुर्ग दीवारो से घिरा हुआ शहर था जिसमें शस्त्रागारों और खाने के उचित भंडार थे। समान रुप से सेनासुख और रानियाँ भी अनेक ठिकानों और महत्व का दिवारो से घेरा हुआ शहर था।

   ii) **शैक्षणिक या तीर्थ स्थान और मंदिरो के शहर** : मठ और विहार शैक्षणिक और धार्मिक क्रियाकलापों के शहर थे। इसका विशिष्ट उदाहरण नालंदा था, जबकि द्वारका, तिरुपति, पुरी इत्यादि जैसे मंदिरो के शहर थे और हरिद्वार, गया इत्यादि तीर्थ स्थान के केन्द्र थे।

   मंदिरों का शहर काशी/बनारस अब वाराणसी

(तस्वीर श्रेयः मार्सीन वियालेक [https://creativecommons-org/licenses/by-sa/3.0)], सामान्य विकिपीडिया से)

यहाँ पर शहरी केंद्र हैं जिसको भारत के दूसरे भागो में भी समान समय पर देखा जा सकता हैं, उदाहरण के लिए, गुजरात के किनारे पर लोथल। हडप्पा सभ्यता के ह्रास के बाद नये शहरी केंद्र दोआब क्षेत्र में आये जो वर्तमान समय के दिल्ली के आस-पास का क्षेत्र है। दिल्ली ने खुद अनेक कालों में अनेक स्तर की नगरीय सभ्यता को देखा है, जिसमें प्राचीन हस्तिनापुर और उसके बाद मध्यकालीन भारत में बसावट और इसके औपनिवेशिक अवतार जिसने इसे राजधानी शहर बनाया और अंत में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के रुप में स्थापित किया।

5.3.2 प्राचीन और मध्यकालीन भारत में नगरीकरण

प्राचीन और मध्यकालीन भारत के शहर की विशिष्ट स्थानिक, आर्थिक, राजनीतिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं को निम्न रुप से वर्णित किया जा सकता हैं:

1) **राजनीतिक और जनसांख्यिकीय:** विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के उद्गम और पतन और तथा भारत के सांस्कृतिक इतिहास ने शुरूआती नगरीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित किया है। वास्तव में, यह राजनीतिक विचार था जिस पर उस अवधि में शहरों का उदय हुआ। "इन शहरों की बनावट शासक और उनके रिश्तेदार और अनुयायियों के इर्द-गिर्द थी, जिनका प्रमुख उद्धेश्य उनके समीप के कृषि कार्यकलापों और इनसे जो अतिरिक्त पैदा प्राप्त कर सके, पर केन्द्रित था (सबरवाल, 1977:2)

2) **स्थानिक:** पारम्परिक शहरों की एक प्रमुख भौतिक विशेषता इसकी दिवार से किलांबदी करना और सुरक्षात्मक खाइयों के साथ-साथ प्राचीन शहरों की सामाजिक संरचना थी, उदाहरण के लिए विभिन्न जातियों का अलग-अलग जगहो में रहना। विभिन्न क्रियाकलापों का स्थान, उदाहरण के लिए, निम्न जाति के लोग जो बाहरी किनारे या शहर की दिवार के पास रहते थे और शारिरिक परिश्रम करते थे वही दूसरी ओर उच्च जाति के लोग प्रशासक होते थे जो किले के आस-पास रहते थे।

3) **आर्थिक और सामाजिक:** यद्यपि राजाओं के राज का सम्पूर्ण इतिहास में उदय और पतन हुआ हैं, फिर भी पारम्परिक शहरों के सामाजिक और आर्थिक संस्थानों नें काफी हद तक स्थिरता का प्रदर्शन किया। कारीगर और व्यापारी लोग मंडली में संगठित होते थे जिसको श्रेणी कहते थे । इन शहरों में, एक जाति के पेशे पर आधारित शिल्पी संघ श्रेणी को श्रेणी और विभिन्न जातियों और पेशो के आधार पर बने शिल्पी संघ को पुगा कहते थे। पारम्परिक शहरों में महत्वपूर्ण प्रकार्य जैसे बैंकिंग, व्यापार, निर्माण (और कुछ हद तक न्यायिक भी), इत्यादि. शिल्पी संघ द्वारा किये जाते थे, राव (1974) के अनुसार।

5.3.3 उपनिवेशवाद के अधीन नगरीकरण

यूरोपियन औपनिवेशिक व्यापारियों के भारत में आने से नगरीकरण की प्रक्रिया ने एक नये चरण में प्रवेश किया। समुद्री किनारे के क्षेत्र पोर्ट (पत्तन) के साथ साथ व्यापारी केंद्र के रूप में शुरुआत से ही व्यापार के उद्धेश्य के लिए महत्वपूर्ण हो गये और सतरहवी और अठारहवी शताब्दी में नये शहरों का उदय हुआ। उन्नीसवी सदी ने राजनीतिक केन्द्रों के रूप कलकत्ता, बाम्बे और मद्रास जैसे शहरों को देखा जब ब्रिटिश शासको ने अपने-आप को भारत में सुदृढ किया। इस अवधि में, नगरीकरण का प्रक्रिया आसान हो गयी और आर्थिक अवसरों को वृहत बनाया और लोगों के सामाजिक क्षैतिज को नये आर्थिक और राजनीतिक संस्थानो का विकास करके, यातायात और संचार के नये संसाधनो जैसे टेलीग्राफ, रेल, सडक और जलमार्ग की विकसित पद्धतियों के द्वारा वृहत किया। पारम्परिक कुटीर और छोटे उद्योगों को ध्वंस करके ग्रामीण कारीगरो और मजदूरो को व्यवसाय के लिए शहर की तरफ, स्थाई या अस्थाई रुप से ले आये ।

उपनिवेशवाद के अधीन नगरीकरण की नई प्रक्रिया ने शिक्षा का फैलाव कर और नये संस्थाओं को स्थापना कर के नगरीय केंद्रो को बदल दिया। नौकरी जैसे शिक्षक, पत्रकारिता, वकील इत्यादि ने नये विश्व दृष्टिकोण को जन्म दिया और नगरीय केंद्र नये सामाजिक और राजनीतिक विचारों, विभिन्न आर्थिक क्रियाकलापों और विविध जनसंख्या का केंद्र के रूप में विकसित हुए ।अनेक आर्थिक अवसरों और व्यवसायिक और सामाजिक गातिशीलता को नगरीय भारत में संम्भव बनाया।

बोध प्रश्न 1

i) श्रेणी और पोगा में विभेद करें?

....

....

....

....

....

ii) किस आधार पर प्राचीन भारत के पारम्परिक शहरों को वर्गीकृत किया गया था?

....

....

....

....

....

5.4 स्वतंत्र भारत में नगरीकरण

भारत में, बीते वर्षो में, शहरी क्षेत्रों के निर्धारण का मापदंड अनेक बदलाव और सुधार से होकर गुजरने लगा है। 1901 में, किसी क्षेत्र या वसोवास को शहर के रुप में वर्णन करने की मुख्य कसौटी उसका प्रशासनिक ढाँचा और आकार था ना कि आर्थिक विशेषताएँ। परिणामस्वरूप, अनेक शहरों को वास्तव में मात्र अधिक बढ़ा हुआ गाँव के रुप में मान लिया था। अन्य प्रशासनिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं के अतिरिक्त, 1961 में शहरी क्षेत्रों को आर्थिक विशेषताओं के आधार पर वर्णित किया गया। 1961 की जनगणना में जिस परिभाषा को स्वीकार किया गया वह 1971, 1981, 1991 और फिर 2001 में भी वही परिभाषा लागू की गई । इस परिभाषा के अनुसार शहरी क्षेत्र हैः

a) वह जगह जो या तो नगर निगम हो या नगर का क्षेत्र हो, या एक शहर समिति के अधीन हो या अधिसूचित किया गया क्षेत्र हो या छावनी बोर्ड के अधीन हो।

b) कोई भी जगह जो निम्न मानदण्डों को दर्शाता होः

- कम से कम 5000 लोग हो
- कम से कम 75 प्रतिशत लोगों का व्यवसाय गैर-कृषि हो
- धनत्व कम से कम 1000 व्यक्ति प्रति मील हो, और
- ऐसी जगह जहाँ कुछ उच्चारित शहरी विशेषताएं और सुविधाए हो जैसे नए स्थापित औद्योगिक क्षेत्र, बड़ी आवासीय बस्तियाँ, पर्यटक के महत्व की जगह और नागरिक सुविधाए हो।

एक शहरी संकुलन लगातार शहरी फैलाव को बनाता हैं और सामान्य रुप से इसमें शहर और इसके आस-पास की शहरी अभिवृद्धि अथवा दो या उससे अधिक शहरों की भौतिक समीपता ऐसे शहर के साथ जो समीपता और संगठन की अभिवृद्धि दिखाता है। (जनगणना रिपोर्ट, 2001)। भारत की जनगणना (भीडे, 2017) ने नगरीय क्षेत्रों को मौटे तौर पर निम्न प्रकार में वर्गीकृत किया हैः

i) **वैधानिक शहरः** सभी जगह जहाँ नगरपालिका, निकाय, छावनी बोर्ड, अधिसूचित शहर क्षेत्र की समुदाय, इत्यादि हो। ii) जनगणना शहरः सभी गाँव जिनकी पहले जनगणना में जनसंख्या 5000 से अधिक हो, कम से कम 75 प्रतिशत लोग गैर-कृषि पेशों से जुड़े हुए हो और जनसंख्या घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति कि.मी. हो। iii) शहरी (संकलन): लगातार शहरी फैलाव जिसमें एक या अधिक शहर हो। iv) शहरी वृद्धिः मुख्य शहर या शहर के समीप की जगह, ऐसी सुसंगठित जगह जैसे रेलवे कॉलोनी, विश्वविद्यालय प्रांगण, पोर्ट क्षेत्र इत्यादि जो शहर के सीमा के बाहर हो।

पूर्णतः स्पष्ट वर्णित शहर या नगर के अलावे, शहर और नगरों की अभिवृद्धि को भी शहरी जमाव मानते हैं। 1961 की जनगणना के समय में, 'शहर समूह' के विचार को शहरी विस्तार का वृहत तस्वीर प्राप्ति के लिए स्वीकार किया गया। यह 1971 में शहरी संकुलन के विचार के साथ संशोधित किया गया ताकि शहरी निरंतरता, प्रक्रिया और शहरी की प्रवृत्तियों और अन्य संबंधित मामलों की अच्छी प्रतिपुष्टी मिले। यह विचार विना किसी बदलाव या सुधार के 2001 के जनगणना तक सक्रिय रहा।

तालिका 5.1ः केंद्रो का वर्गीकरण (दर्जा के अनुसार)

जनसंख्या वर्गीकरण	(2001 जनगणना)	शहरों के उदाहरण
दर्जा-1	100,000 और अधिक	दिल्ली, मुम्बई
दर्जा-2	50,000 से 99,999	पुणे, जयपुर
दर्जा-3	20,000 से 49,999	कोच्चि, आगरा
दर्जा-4	10,000 से 19,999	इलाहाबाद, फरीदाबाद
दर्जा-5	5,000 से 9,999	रायपुर, मैसूर
दर्जा-6	5000 से कम	जामनगर, इटाव।

आइए, स्वतंत्र भारत में नगरीकरण के विभिन्न पहलुओं पर एक नजर डाले।

1) **जनसांख्यिकीयः** स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, शहरी जनसंख्या महत्वपूर्ण रुप से बढ़ गयी है। भारत की शहरी जनसंख्या 1901 में 25.8 मिलियन से बढ़ कर 1951 में 62.4 मिलियन और 285.4 मिलियन 2001 में हो गयी। फलस्वरुप कुल शहरी जनसंख्या में दस गुणा से अधिक वृद्धि दिख रही हैं। भारत के कुल शहरी जनसंख्या, 2001 की जनगणना के अनुसार विश्व की शहरी जनसंख्या का दस प्रतिशत है।

तालिका 5. 2ः कुल जनसंख्या की तुलना में शहरी जनसंख्या

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या (मिलियन में)	शहरी जनसंख्या (मिलियन में)	शहरी जनसंख्या का कुल जनसंख्या में प्रतिशत
1901	238.3	25.8	10.83
1911	252.1	25.9	10.27
1921	251.3	28.1	11.18
1931	278.9	33.5	12.01
1941	318.6	44.2	13.87

1951	361.0	62.4	17.29
1961	439.2	78.9	17.96
1971	548.1	109.1	19.91
1981	683.3	159.4	23.33
1991	846.3	217.6	25.71
2001	1027.1	285.4	27.78
2011	1210.2	377.1	31.16

स्रोत भारत का जनगणना

2) **स्थानिकः** असमानता ने भारतीय शहरी परिदृश्य को स्थान के रुप में भी अंकित किया हैं। यह असमानताएँ खासकर असंतुलित जनसंख्या जमाव, क्षेत्रीय असमानता और कभी कभार जनगणना द्वारा दी गयी शहरी क्षेत्र के परिभाषा के बदलाव से हुई हैं। इस प्रसंग में हमे दो अवधारणाओं का उल्लेख करना हैं, एक 'अति शहरीकरण' और दूसरी 'उप-शहरीकरण'। जब नगर या शहरी क्षेत्र की जनसंख्या को जगह देने में (उदा. कोलकाता, मुम्बई) नागरिक सुविधा प्रदान करने में या विद्यालय, अस्पताल इत्यादि के लिए खानपान की जरूरत पूरी करने में बॉधा हो तब इसको अति नगरीकरण बोलते हैं।

दिल्ली (दूसरो के बीच में) उप-नगरीकरण का विशेष उदाहरण हैं। इसका मतलब है कि नगरों आस-पास के गाँवो को शहर में मिलाना जिसमें निम्न विशेषताए होः a) जमीन के शहरी (कृषि से अलग) उपयोग में तीव्र वृद्धि। b) नगर के आस-पास के क्षेत्रों को नगर की सीमा के भीतर मिलाना और c) शहर और इसके आस-पास से सभी प्रकारों के बीच में गहन संचार।

3) **आर्थिकः** स्वतंत्र भारत में नगरीकरण के आर्थिक विशेषताओं पर बात करते समय, व्यवसायिक विविधता और देशांतर महत्वपूर्ण पहलू हैं। 1991 में लगभग कुल कामगारो का 67 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में था। 2001 में कुल कामगारो का मात्र 58 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में रह गया था। 2001 के जनगणना का परिणाम स्पष्ट रुप से बताता है कि मजदूरो की बनावट में परिवर्तन हुआ हैं जो पहले मुख्य रूप से कृषि में था वो अब सामान्य रुप से कृषि से अलग पेशे में हैं (जनगणना रिपोर्ट, 2001)।

ग्रामीण आपदा और बेरोजगारी उन कारणो में से है जिस के कारण नगरीय जनसंख्या लगातार बढ़ रही हैं। अतिरिक्त ग्रामीण श्रम शक्ति रोजगार पाने के आशा में नगरीय केंद्रों की तरफ धकेली जा रही हैं क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार नहीं हैं। अनेक उम्मीद जैसे अच्छी नौकरी की आशा, अच्छा घर, इलाज, शिक्षा और यातायात सुविधा जैसे अन्य प्रमुख कारण हैं जिन्होनें ग्रामीण जनसंख्या (धनवान जनसंख्या के साथ साथ) के भागों को शहर में खींच लायी हैं। गाँवो से पलायन की प्रक्रिया तब शुरु होती हैं जब कृषि क्षेत्र में तुलनात्मक परिपूर्णता पहुँच जाती हैं, इस तरह से औद्योगीकरण को नगरीकरण का आधार नहीं मान लेना चाहिए, ग्रामीण क्षेत्रों में असंतुलित जमीन/आदमी का अनुपात के परिणाम स्वरुप भी ऐसा होता है।

4) सामाजिक-सांस्कृतिकः भारतीय नगरों और शहरों ने नस्ल, जाति, वंश, वर्ग और संस्कृति के संबंध में विविधता को हासिल किया हैं लेकिन प्रवासी लोगों ने अपनी

अलग सांस्कृतिक परम्परा को शहरों में बनाये रखा हैं। एन. के. बोस (1968: 66) बताते है कि प्रवासी लोग उन लोगों के पास रहना चाहते है जिनके साथ उनकी भाषा, स्थान, क्षेत्र, जाति और वंशानुगत गठबन्धन है। अनेक भारतीय शहरों का मिश्रित चरित्र हैं, उदाहरण के लिए, वो सब राजधानी शहर हैं, व्यापार और व्यवसाय के केंद्र हैं, और रेलवे के महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन इत्यादि हैं। शहर का पुरातनत्म या और मुख्य भाग वहाँ होता है जहॉ पर पुराने लोग रहते हैं और उनके किनार पर हम नये प्रवासी लोगों को देखते हैं।

अनेक भारतीय शहरों में, लींच (1974) बताते हैं, खासकर पारम्परिक शहरों जैसे आगरा में पड़ोस जाति और धार्मिक समूह की सजातीयता के रूप में होता हैं। यहाँ पर अछूत जाटब जाति के लोग खास क्षेत्र में एकत्रित है जिसको मौहल्ला कहते हैं। लेकिन कुछ बदलाव आया हैं। अधिकत्तर कारण हैः राजनीतिकरण, शिक्षा का फैलाव, और व्यवसायिक विभिन्नता। लेकिन डिसूजा (1974) ने सूचित किया है कि नियोजित शहर जैसे चंडीगढ में पड़ोस वंश, सामान्य अभिरुचि और अन्य समानताओं के आधार पर विकसित नहीं हुआ हैं। इस शहर में धार्मिक क्रियाकलाप, दोस्ती और शैक्षणिक गठजोड अकसर अपने पडोस से दूर रहता हैं।

सामाजिक स्तरीकरण ने स्वतंत्र भारतीय नगरीय समाज में एक नया रुप लिया हैं। यह माना जाता है कि नगरीकरण से शहरी क्षेत्र में जाति अपने-आप को वर्ग में बदल लेता है। लेकिन जाति व्यवस्था शहर में भी उपस्थित रहती है, यद्यपि महत्वपूर्ण संगठनात्मक विभिन्नता के साथ उदाहरण के लिए, हैरोल्ड गौल्ड (1965) बताते है कि लखनऊ के रिक्शावाले अनेक धर्म और जाति समूह से हैं लेकिन अपने एक समान व्यवसाय के संबंध में बातचीत के तरीकों और अभिवृत्तियों में एकरुपता दिखाते हैं और इसका अर्थ है कि नगरीय क्षेत्रों में व्यवसाय के चुनाव में जाति का कोई महत्वपूर्ण लेना-देना नहीं है।

पहले से ज्यादा अब शहरी क्षेत्रों में अंतर-जातीय या अंतर-धर्म विवाह को होते हुए देखा जा सकता हैं। यद्यपि यह बताया गया है कि संयुक्त परिवार शहरी क्षेत्रों में विखंडित हो रही है, देश के अनेक भागो में अध्ययन करने से भी यह पता चला है कि कुछ जातियों में अभी भी संयुक्त परिवार मिलते है जैसे दिल्ली के खत्रियों में और मद्रास के क्षेत्रीयर में (विस्तृत के लिए कपूर (1965), सींगर 1968 देखे)

(**स्रोतः** इकाई 4, भारतीय समाज में शहरीकरण के स्वरूप ESO-012, 2017)

बोध प्रश्न 2

i) वर्णन करे कि कैसे भारतीय जनगणना शहरी भारत को वर्गीकृत करता हैं?

....

....

....

....

....

....

....

5.5 ग्रामीण नगरीय सातत्य

हम ने गांव और नगरीय भारत पर एक स्थानिक और सामाजिक बनावट के रुप में अलग-अलग विचार किया हैं, क्योंकि इन दोनों का भिन्न चरित्र हैं। जबकि, वास्तव में, विशेष कर भारतीय प्रसंग में, शहरी और ग्रामीण का भिन्न वर्ग नहीं है, यदि वो ऐसे दिखते भी है फिर भी नहीं। अनेक समाजशास्त्रियों ने सुझाव दिया है कि एक सरल ग्रामीण-शहरी जनसंख्या का विभाजन ना तो पर्याप्त हैं और न ही उचित हैं और यह अत्याधिक सामान्य हैं। हम अपने शहर में देख सकते हैं कि सांस्कृतिक गुण जो ग्रामीण हैं वो बहुत प्रचलित हैं और ग्रामीण लोग खुद पर शहरी जीवन का प्रगाढ़ असर दिखाते हैं। अनेक समाजशास्त्री तर्क देते है कि ग्रामीण और नगरीय विशेषताओं के श्रेणीबद्ध होने से ग्रामीण-नगरीय सातत्य हैं। समाजशास्त्री मैकाइवर (1931) विश्वास करते है कि यद्यपि लोग समुदाय को ग्रामीण और शहर में बाँटना चाहते हैं, लेकिन इन दोनों तरह के समुदाय के बीच में सीमा रेखा स्पष्ट नहीं है। वह तर्क देते है कि यहाँ पर साफ सीमा चिन्ह नहीं है जो कहे कि कहाँ पर शहर समाप्त हो गया और गाँव शुरु हो गया, प्रत्येक गाँव में शहर का कुछ तत्व रहता हैं और प्रत्येक शहर गाँव की कुछ विशेषता लेकर चलता हैं। रेडफील्ड (1947) ने ग्रामीण-नगरीय सातत्य का विचार उनके मैक्सिकों किसानो के अध्ययन के आधार पर दिया है। वो लिखते हैं कारखानों की स्थापना से तीक्ष्ण नगरीकरण का प्रक्रिया, शहरी गुणों और सुविधाओं ने शहरों और गाँवो के बीच का फर्क समाप्त कर दिया हैं।

रामकष्ण मुखर्जी (1974) ने ग्रामीण नगरीय सातत्य को पलायन, परिवार और जाति के पहलू पर पाया। वो लिखते है कि ग्रामीण जनसंख्या का शहर की तरफ पलायन करना अपने साथ ग्रामीण भारत के सामाजिक संगठन के तत्वों को ले जाता हैं। इस तरह से, वो पाते है कि जाति का तत्व पर्याप्त रुप से नगरीय भारत में भी समान हैं और विस्तृत पारिवारिक संरचना भी नगरीय भारत में विद्यमान हैं। मुखर्जी सातत्य नमूना दिखाते समय तर्क करते है कि ग्रामीण-नगरीय संबंध को समझने के लिए नगरीकरण एक उपयोगी वैचारिक औजार हैं। मुखर्जी के तरह ही ओ. एम. लीच (1968) ने आगरा शहर का अध्ययन किया है और पाया है कि यहाँ जाति पंचायत है जैसी की गाँवो में होती हैं। राव (2001) ने भारतीय प्रसंग में उल्लेख किया है कि यद्यपि गाँव और शहर दोनों समान सभ्यता का एक भाग बनाते है जो ब्रिटिश-पूर्व के भारत में नातेदारी और जाति व्यवस्था के द्वारा चित्रित किया जाता था, यहाँ पर कुछ खास संस्थागत प्रारुप और संगठनात्मक रास्ते है जो गाँव और शहर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को अलग करते हैं। अपनी किताब "भारतीय परम्परा का आधुनिकिकरण" (1973) में प्रोफेसर वाई. सिंह, ने तर्क किया है कि ग्रामीण-नगरीय एक-दूसरे से संबंधित है और ग्रामीण समाज की संरचनात्मक विशेषताएं नगरीय समाज में पूर्ण रुप अनुपस्थित नहीं हैं। इस बात से यह नहीं माना जा सकता है कि ग्रामीण समाज में शहरी विशेषताएं पूर्णतया अनुपस्थित है।

सोचें और करें 2

यदि आप ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं तो पता लगाए कि आप के कितने संबंधी शहर में पलायन कर गये हैं? यह सर्वेक्षण करने के बाद, उनके पालायन के कारणों का एक नोट बनाएं।

या

यदि आप एक शहरी क्षेत्र में रहते हैं, पड़ोस में पलायन किए हुए लोगों में जाएं और एक नोट बनाएं।

किसी भी स्थिति में ग्रामीण और शहरी समाज सामान और सेवा के लेन-देन के लिए एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। शहर ग्रामीण भारत पर खाद्यान्न, कृषि पैदावार, मजदूर, कारीगर, पराम्परिक व्यवसाय आधारित मजदूर और कुशल कारीगर के लिए निर्भर करता हैं। ग्रामीण जनसंख्या परिष्कृत समाज, अक्सर कारखाना द्वारा उत्पादित सामान और शिक्षा, मनोरंजन और प्रशासनिक सेवाओं के लिए शहरों पर निर्भर करता हैं।

बाक्स 1: दिल्ली के नगरीय गाँव

दिल्ली अद्भुत है जिस तरह से यह अनेक गाँवों से बनी हुई हैं। जैसा कि शहर ने अनेक ग्रामीण बसावट को बढ़ाया है जिसका कृषि से भिन्न प्रचलन है और इनसे सम्बन्धित सामाजिक जीवन दिल्ली शहरों से घिरा हुआ हैं। वो सब शहरी गाँव या लाल डोरा क्षेत्र माने जाते है, क्षेत्र जो पहले गाँव थे। प्रशासक द्वारा लाल डोरा बॉध कर सीमाओं को चिन्हित किया गया था, इसलिए लाल डोरा कहते है 1908 में वो सब आबादी जमीन के रूप में वर्गीकृत किये गये और इसका उपयोग अकृषि के कार्य के उद्धेश्य के लिए करने लगे। नगरपालिका प्राधिकरण का क्षेत्र या शहरी विकास यहाँ पर लागू नहीं होता था। लाल डोरा क्षेत्र को कानूनन मकान बनाने और निर्माण के कठोर मानकों और नियमों से छोड़ दिया था जैसा दिल्ली नगरपालिका अधिनियम से पारित था। शब्द लाल डोरा दोनों शहरी और ग्रामीण गाँवो में लागू होता था और आज दिल्ली के प्रमुख क्षेत्र (यद्यपि आज भी लाल डोरा के रुप में वर्गीकृत है) व्यवसायिक कार्य और उच्च बसावट के लिए उपयोग होता है जैसे हौजखास गाँव, लाडो सराय, खीडकी गाँव, शाहपूर जाट, छतरपुर आदि।

5.6 भारत में नगरीकरण के मुद्दे

अधिकतर देश (भारत को मिलाकर) तीव्र नगरीकरण का अनुभव कर रहे हैं। अनियोजित नगरीकरण ने खासकर विकासशील देशो में अनेक समस्याओं को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया हैं। यह तीव्र नगरीकरण दिखाता करता है कि आने वाले दो से तीन दशकों के अंदर, यहाँ पर मौलिक आधारभूत ढांचा, घर और रहने के सुविधा की प्रमुख नगरीय केंद्रो में आवश्यक माँग होगी। साफ पानी स्वच्छता, ठोस बेकार को फेकने, गन्दा पानी जाने के नाले, स्वास्थ्य और यातायात की सुविधा की माँग कई गुणा बढ़ जाएगी। अत्याधिक माँग करने वाला नगरीय चुनौतियाँ गरीबी द्वारा दी गयी चुनौती शोषण को कम करने की चुनौती, क्लेश दूर करने की और नगरीय गरीबों के लिए अत्याधिक मानवता की स्थिति बनाने की चुनौती होगी। बेरोजगारी और गरीबी के कारण बढ़ती हुए अपराध दर शहरी क्षेत्रों का दूसरा मुद्दा होगा। तीव्र नगरीकरण से झोपड़-पट्टियों की अत्याधिक वृद्धि होगी जिससे दुख, गरीबी, बेरोजगारी, शोषण, असमानता, शहरी जीवन में गुणवत्ता की दुर्दशा होगी। परिणामस्वरुप, नगरीकरण की प्रक्रिया और विकास अनेक चुनौतियों का सामना करेगा।

हमारे चयनित कोर्स "नगरीय समाजशास्त्र'' में हम लोग नगरीय भारत के विभिन्न पहलू पर विस्तृत बात करेंगे।

5.7 सारांश

इस इकाई को हम ने नगरीकरण के विचार से शुरु किया था, फिर इसकी अनेक दिशाओं और नगरवाद जीवन का एक शैली पर विचार किया। तब, हमने भारत में नगरीकरण के लम्बे इतिहास का परिक्षण किया, प्राचीन और मध्यकालीन से इसके औपनिवेशिक काल के रुप तक। हमने स्वतंत्रता बाद के भारत के नगरीकरण का निरीक्षण किया और उन पहलूओं

का भी जिन्होनें इस की वृद्धि और प्रारुप को प्रभावित किया है। नगरीय केंद्र और नगरीकरण का वर्णन अक्सर ग्रामीण समाज और बसावट (बस्तियों) के संबंध में किया गया हैं, अक्सर यह विचार निकला है कि नगरीय और ग्रामीण विरोधी वर्ग हैं और परस्पर अलग हैं। ग्रामीण-नगरीय सातत्य खण्ड के अन्तर्गत हम ने इस जटिलता की प्रवृत्ति का निरीक्षण किया हैं ताकि हम देखे कि वास्तव में कैसे ग्रामीण और शहरी अन्तक्रिया करते है और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अंतिम खंड में, हम ने संक्षिप्त में बात की है कि कैसे शहरी भारत को समस्या प्रभावित करती हैं।

5.8 संदर्भ

वसन्त, पी. के. (2017) शहरी इतिहास क्या है? भारत में शहरीकरण में (MHI-10). इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

भारत की जनगणना, 2001

मैकल्वर, आर. एम. (1931). समाजः इसका बनावट और परिवर्तन. आर. लाँग और आर. आर स्मिथ, शामिल.

मुखर्जी, आर. (1974). शहरीकरण और सामाजिक परिवर्तन. भारत में शहरी सामाजिक विज्ञान, नई दिल्लीः ओरिएन्ट लाँगमैन, 241-250.

राव, एम.एस.ए. (लिखित.) (1991). शहरी सामाजिक विज्ञान में एक पढ़नेवाला. ओरिएन्ट लाँगमैन, नई दिल्ली.

राव, एम.एस.ए. (लिखित.) (1974). भारत में शहरी सामाजिक विज्ञान. ओरिएन्ट लाँगमैन, नई दिल्ली.

रेडफिल्ड, आर. (1947). फोक समाज. सामाजिक विज्ञान का अमेरिकन जरनल, 52(4), 293-308.

सबरवाल, एस. (लिखित.) 1978. शहरी भारत में प्रक्रिया और संस्थानः सामाजिक वैज्ञानिक अध्ययन. विकास प्रकाशन घरः नई दिल्ली।

भीडे, अमरीता (2017) भारत में शहरी विकास अनुभव, IGNOU (ईकाई 4 MEDS 041 B1E-p 65) http%//egyankosh-ac-in/bitstream/123456789/39119/1/ Unit&4-pdf 20th डिसम्बर 2018 में पहुँच।

लींच, ओ. एम. (1968). 10. छुआछुत का राजनीतिः आगरा से एक मुद्दा, भारत. भारतीय समाज का बनावट और बदलाव, 47, 209.

वर्थ, एल. (1938). शहरीकरण जीवन का एक तरीका. समाजविज्ञान का अमेरिकन जर्नल, 44(1), 1-24.

शहरीकरण (2017) IGNOU http%//egyankosh-ac-in/bitstream/ 123456789 /2727 1/1/ Unit&25-pdf 20th डिसम्बर 2018 में पहुँच।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

i) प्राचीन और मध्यकालीन शहर में एक जाति के व्यवसाय पर आधारित शिल्पी संघ को श्रेणी कहते थे और अलग-अलग जाति और व्यवसाय पर आधारित शिल्पी संघ को पुगा कहते थे।

ii) वास्तुशास्त्र (उत्कृष्ट भारतीय कला पर निबंध) ने विभिन्न प्रकार शहरों के बीच में भिन्नता दिखाया है जो उसके कार्यकलाप के विशेषता जैसे व्यापार, व्यवसाय, निर्माण, प्रशासन, धर्म, शिक्षा और सैन्य चढ़ाई पर आधारित है।

बोध प्रश्न-2

i) भारत की जनगणना (भीड़े, 2017) ने शहरी क्षेत्रों को मोटे तौर पर निम्न प्रकार में वर्गीकृत किया हैः

1) वैधानिक शहरः सभी जगह जहाँ पर नगरपालिका, निकाय, छावनी बोर्ड, सूचित शहर क्षेत्र समुदाय इत्यादि हो।

2) जनगणना शहरः सभी गांव जिनकी पहले के जनगणना में 5000 जनसंख्या हो, कम से कम 75 प्रतिशत मुख्य कामकरने वाले लोग अकृषि के व्यवसाय में संलग्न हो और कम से कम 400 व्यक्ति प्रति किलोमीटर की जनसंख्या घनत्व हो।

3) शहरी जमाव (UA)ः लगातार शहरी विस्तार जिसमें एक या अधिक शहर साथ हो।

4) शहरी वृद्धि (OG)ः मुख्य शहर या नगर के समीप का क्षेत्र ऐसी संसगठित जगह जैसे रेलवे कालोनी, विश्वविद्यालय प्रांगण, पोर्ट क्षेत्र इत्यादि जो शहर की सीमा के बाहर हो।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY